Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

हरियाणवी साहित्य में 'मीराबाई'

Pinky Devi*

Gram & Post-Deoban, District-Kaithal, Haryaya-136027

***सार** – जब हम देश के रंगमंच पर खड़े होकर विहंगम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि यह देश संत-महात्माओं, पीरों-फकीरों की पुण्य भूमि है। इन संत-महात्माओं में मीराबाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह भक्तिकाल के कवियों में सर्वोपरि है।*

---------------------------------x---------------------------------

जब हम भक्तिकाल पर दृष्टिपात करते हैं तो इस काल में भक्ति की दो धाराओं की ओर संकेत किया जाता है- 1. निर्गुण धारा, 2. सगुण धारा। सामान्यत: निर्गुणोंपासकों को संत तथा सगुण उपासकों को 'भक्त' कहा जाता है। संत साहित्य के विद्वान् डॉ. राजदेव सिंह ने भी इसी मत की पुष्टि करते हुए कहा है- हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में ये शब्द (संत और भक्त) भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं- 'संत' निर्गुणोपासक होते हैं और भक्त सगुणोपासक।[1] इस प्रकार 'संत' और 'भक्त' भिन्न-भिन्न अर्थ के द्योतक हैं। इस आधार पर हम मीराबाई को भक्त (भक्तिन) की कोटि में रख सकते हैं- क्योंकि वह श्रीकृष्ण की अनन्य सगुण उपासिका हैं।

मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा ने जिन महान् कवियों को जन्म दिया, उनमें राजस्थान की मीराबाई का विशिष्ट स्थान है। नाभादास, ध्रुवदास, मलूकदास, हरिराम व्यास आदि भक्तों और संतों ने इनका गुणगान किया है। मीराबाई का समय ईसा की पन्द्रहवी शताब्दी निर्धारित किया गया है। राजस्थान के विद्वान् कृष्णलाल मोहनलाल झाबेरी ने उनका जन्म सन् 1403 ई. और मृत्यु सन् 1470 माना है। ग्रियसन ने मीरां को सन् 1420 में उपस्थित माना है।

ब्रह्मदत्त वाग्मी कृत 'मेड़ताणी मीरा' :

ब्रह्मदत्त वाग्मी का जन्म हरियाणा के गुडग़ांव जिले के घामड़ौज नामक गाँव में 19 दिसम्बर, 1916 को हुआ। वह हिन्दी-संस्कृत के उद्भट विद्वान थे।मीराबाई का देश के सभी प्रांतों में उल्लेख हुआ है। इस दृष्टि से हरियाणा भी पीछे नहीं है। हरियाणा के साहित्यकारों ने मीराबाई की अपने-अपने ढंग से प्रस्तुति की है। 'मेड़ताणी मीरा' कविवर वाग्मि की महत्त्वपूर्ण रचना है। हिन्दी महाकाव्य की परम्परा में इस रचना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस महाकाव्य में भक्ति काल की कृष्णभक्तिन मीराबाई की कथा को चौदह रत्नों (सर्गों) में विस्तार से वूणत किया गया है। इस महाकाव्य में काव्यशास्त्रीय लक्षणों का सुन्दर निर्वाह हुआ है। महाकाव्य की कथावस्तु इतिवृत्तात्मक शुष्कता से रहित है। कवि ने सम्पूर्ण काव्य को रोचक और हृदयग्राहय बनाने का सफल प्रयास किया है।

महाकाव्य के प्रथम रत्न में मीराबाई का सामान्य परिचय दिया गया है। मीराबाई जोधपुर के राजा राव जोधा की प्रपौत्री, मेड़ता के राव दूदा जी की पौत्री और मेड़ता के राठौड़ रत्नसिंह की पुत्री थी। 'मीरा' का परिचय देते हुए कवि ने कहा है-

विहित कर निज यश का सुवितान।

धवल धामावलि विलसित गान।।

जोधपुर सुखद सुनगर महान।

हुए जोधा जी सुविदित नाम।

धन्य दूदा जी जिनके धाम।

उदित थे रत्नसिंह शुभ नाम।

उन्हीं का तपोभूमि संभार।

हुआ था मीरा का अवतार।[2]

इसी सर्ग में मीरा के चरित्र का उज्जवल अंकन हुआ है। मेवाड़ के सुप्रसिद्ध राणा सांग के पुत्र भोजराज के साथ मीरा की सगाई इत्यादि के प्रसंगों का समावेश भी इसी सर्ग में हुआ है।

द्वितीय रत्न में मीरा के विवाह उत्सव पर मेवाड़ नगर की सजावट का कवि ने विस्तार से वर्णन किया है। कवि ने इसी

www.ignited.in

सर्ग में भोजराज के निधन और मीरा के वैधव्य का वर्णन भी किया है। तृतीय रत्न में मीरा की वियोग अवस्था का विस्तार से वर्णन किया गया है। चतुर्थ रत्न में मीरा के पश्चाताप और करुण भाव का विस्तृत विवेचन किया गया है। पंचम रत्न में मीरा के विरहालाप का विस्तार से वर्णन करते हुए कवि ने कहा-

नाथ, आपके बिना न मेरी।

औषध कोई कर पाएगा।।

वैद्य विचारा भौतिकवादी।

मनोव्यथा क्या हर पाएगा।[3]

षष्ठ रत्न में मीरा अपनी व्यथा कथा को भुलाने के लिए वृन्दावन जाने के लिए तैयार हो जाती है। उसके ससुर राणा और अन्य दरबारी लोग उसे समझाने का प्रयास करते हैं। लेकिन वह त्रियाहठ के अनुसार अपने हठ पर अडिग रहती है। सप्तम रत्न में मीरा की अन्तर्वेदना का करुणापूर्ण वर्णन किया है। अष्टम रत्न में भोजराज की मृत्यु के बाद राणा सांगा की मन:स्थिति का कवि ने बहुत विस्तार से वर्णन किया है। इसी सर्ग में राणा की करुणिक व्यथा का कवि ने वर्णन इस प्रकार किया है-

हाय, भोज निश्चिन्त हुआ तू

यौवन में भी सहा न भार

हम वृद्धों पर छोड़ चल दिया।

तरणी की उलझी पतवार।[4]

नवम् रत्न में मीरा बाई के द्वारा प्रियतम से मिलने की उत्कण्ठा का वर्णन रहस्यमय ढंग से हुआ है। कवि ने मीरा की रहस्य भावना को उदात्त रूप देते हुए कहा है-

ओ नीले पर्दे के वासी, बुला रही चिर मीरा दासी।

मुझे उठा ले जाओ, मेरे प्रियतम के उस पार।

मिलूँगी दोनों बाँह पसार, सुभग बन दर्शन की बौछार।[5]

दशम रत्न में मीरा के वृन्दावन प्रस्थान के संकेतों को दर्शाया गया है। एकादश रत्न में राणा सांगा की व्यथा को व्यक्त किया गया है। द्वादश रत्न में कवि ने मीरा की विरह वेदना का मार्मिक अंकन किया है जिसमें दर्शन का पुट अधिक है। त्रयोदश रत्न में मीरा की उद्र्धमुखी चेतना और रहस्यमयी भावनाओं का विस्तार से वर्णन किया हे। चतुर्दश रत्न में मीरा की उस परम स्थिति का वर्णन किया गया है, जिसे ब्रह्मलीन की अवस्था कहा जा सकता है। इसी सर्ग के अंत में कवि ने 'मेड़ताणी मीरा' काव्य के मन्तव्य का भी संकेत दिया है-

मेड़ताणी की कहानी शुद्ध अपना जाह्नवी हैं।

परम रसिक विनोदिनी यह पावनों की पावनी है।[6]

'मेड़ताणी मीरा' महाकाव्य में रहस्यानुभूति, सौन्दयानुभूति और प्रकृति प्रेम का सुन्दर सामंजस्य हुआ है। इस महाकाव्य की भाषा, प्रौढ़, गंभीर और संस्कृत निष्ठ है। इस काव्य में अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि ने सहज भाव से अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, उपमा, मानवीकरण आदि का सुन्दर सन्निवेश किया है। सूक्ति सौष्ठ आदि मुहावरेदानी भी अनुपम बन पड़ी है। यदि इस महाकाव्य को गीतिकाव्य भी कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी क्योंकि इसमें आत्माभिव्यक्ति, रसात्मकता, काल्पनिकता, संगीतात्मकता, भावगत एकता, शैलीगत, सुकुमारता आदि गीतिकाव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ इस काव्य से मिलती हैं। वास्तव में यह महाकाव्य हिन्दी जगत की एक अनूठी रचना है, जिसमें भाषा और भाव का सुन्दर समावेश हुआ है।

पं. लखमीचंद कृत 'मीराबाई'

हरियाणा के सोनीपत जिले के जांटी कलां में सन् 1901 में जन्में पं. लखमीचंद हरियाणा के प्रसिद्ध लोकनाट्यकार थे। उन्होंने 19 लोकनाट्य लिखे जिनमें 'मीराबाई' भी एक है। 'मीराबाई' ग्रंथ में 54 पद हैं जिनमें मीरा के जीवन और भक्ति का वर्णन किया है। इस काव्य-रचना में इतिहास और कल्पना का सुंदर पुट मिलता है। कवि ने 'मेड़ता' को 'मेड़तगढ़' और इसके राजा को 'मिडंत' कहा है। मीराबाई के विवाह का प्रसंग भी काल्पनिक है। मीरा का विवाह उदयपुर के राणा से करने की बात बिल्कुल काल्पनिक है। शादी के बाद वह राणा को 'भाई' कहकर संबोधित करती है। उदयपुर में रहती हुई वह ठाकुरजी की पूजा करती है। इससे राणा बहुत नाराज हो जाते हैं। लेकिन मीरा टस से मस नहीं हुई। ऐसा लगता है कवि ने मीरा की भक्ति को उजागर करने हेतु यह काव्य रचा है।

मीराबाई अपने माता-पिता से बहुत प्रभावित थी। इनके माता-पिता से प्रतिदिन गिरधर मंदिर में जाया करते थे। वे दोनों मंदिर में कृष्ण के गुण गाते थे। कवि कहता था-

राजा राणी दोनों मिल कै पूजा करण को जाते थे।

प्रेम नेम हित चित्त करके श्री गोविंद के गुण गाते थे।[7]

लखमीचंद के अनुसार मेड़तगढ़ (मेड़ता) के राजा पिडंत राज करते थे। वह बड़ा धर्मात्मा और प्रतापी राजा था। उसके कोई संतान नहीं हुई थी। उसने साधु-संत और गऊ-ब्राह्मण की सेवा की तो पचास साल की उम्र में उसके घर पुत्री का जन्म हुआ। ब्राह्मणों ने राजा ने बताया कि इस लडकी का जन्म मीन लग्न में हुआ है। इसका नाम मीरा रख दिया जाए। यह लडक़ी सारे संसार में अपना और अपने माता-पिता का नाम रोशन करेगी।

समय के साथ-साथ मीरा बड़ी होने लगी। राजा और रानी ठाकुरजी की पूजा करने रोज मंदिर में जाया करते थे। मीरा में भी ठाकुरजी के मंदिर में जाने की हूक उठी। वह अपनी माता से कहती है-

हाथ जोड़ आगै खड़ी करूँ मन्दिर की सैल।

दरसन करूँ भगवान के, मैं भी चालूं गैल।।[8]

मैं भी चालूंगी तेरे साथ मैं री मेरी माँ।

श्री ठाकुर जी के पूजने का चा।।टेक।।

मेरा भी भगवान में री मोह री,

हृदय में चसी ग्यान की लौ सै।

भगति तै ही सै भगवान की री लगता।।[9]

रानी ने कहा, बेटी अभी तू बच्ची है, पढऩे5लिखने में मन लगा। अभी तेरे पूजा-पाठ करने के दिन नहीं हैं। मीरा ने पूछा माँ भगवान की भक्ति के सिवाय और कौन-सी पढ़ाई है तो माँ ने उत्तर दिया-अभी तो तू यही पढ़ा कर-

चंचल चपल अक्कल चतराई किसी तेज या बुद्धि तेरी।

बाल उपदेश छर्या गोड्यां मैं पढ़ ले बेटी मेरी।।[10]

मीरा अपने बाल हठ के कारण ठाकुरजी की पूजा के लिए साथ चल दी। रास्ते में एक लडक़े की घुड़चढ़ी हो रही थी। दूल्हे को घोड़ी पर चढ़े ठाकुर पूजा के लिए मंदिर की ओर आते देखकर जीरा ने अपनी माता से पूछा हे माँ मेरा दुल्हा (पति) कौन है? अपनी लाडली बेटी की जिद्द देखकर उसे टालने के लिए माता ने कृष्ण भगवान की तरफ संकेत करके यूं ही कह दिया-तुम्हारे पति कृष्ण भगवान हैं। फिर क्या था, भगवान कृष्ण को ही अपना पति मानकर छ: वर्ष की कन्या (मीरा) उनकी सेवा बंदगी करने लग गई-

तेराध्यान पति, मेरी ज्यान पति, भगवान पति मेरी रटन मेरे मन में।

पति मेरा ध्यान प्रेम से धर्या, मेरा सब तरियाँ मन भर्या।।

रटूं नाम पति, सुरधाम पति, सुबह श्यामपति और हजार बार दिन में।

प्रभु थारी भक्ति में आनंद, काट्यो जन्म-मरण के फंद।।[11]

कृष्ण मुरारी म्हारी बेदना नै मेट।

अर्ज करूँ सूँ थारे पायां कै मैं लेट।।[12]

मीरा मंदिर से बाहर निकलते ही क्या देखती है कि तालाब पर कुछ शिकारी पानी पीते हुए हिरणों को अपने बाणों का निशाना बनाने के लिए तैयार बैठे हैं। मीरा शिकारियों से कहती है-

कौण मिरग मारण नै हे त्यार, आड़ै हुकम नहीं सै मेरे बाप का।

तुम चिल्ले पर तीर चढ़ाओ मत, इसी कड़वी नजर लखाओ मत।।[13]

शिकारी से मीरा की सुंदरता का वर्णन सुनकर उदयपुर के राजा का मन चंचल हो गया। उसने मीरा की शादी के लिए एक चिट्ठी मीरा के पिता को लिखी। पिता जी अपनी पत्नी से कहते हैं-

जिसकै बेटी घरां स्याणी, उसनै नींद किसी आणी।

चाहिए रोटी भी ना खाणी, राणी डूबग्यी कती।।

स्याणी बेटी घरां कुवारी कुल कै लांणा होगा।

मात-पिता सिर भार चढ़े फेर कड़े ठिकाणा होगा।।[14]

मीरा की माता गुस्से में भरकर अपनी बेटी से कहती है कि शादी करना स्त्री का धर्म है और पति की सेवा करना उसका सच्चा कर्म है। माँ की बात का जवाब देती हुई मीरा कहती है-

ब्याह शादी की नहीं जरूरत, परम शांति मन मैं।

तेरी बेटी की ज्ञान ध्यान से लो लगरी हरि भजन मैं।[15]

उदयपुर के महाराणा बारात लेकर मेड़तागढ़ आ जाता है। मीरा का बाप कमजोर था, राणा जबर था। इसलिए मीरा की शादी उसे राणा से करनी पड़ी। मीरा इस शादी से बिल्कुल भी खुश

www.ignited.in

नहीं थी। मीरा डोले में बैठने के लिए मजबूर हो गई और उसने श्री ठाकुरजी की मूर्ति छुपाकर अपने साथ रख ली। मीरा जाती हुई सुबक-सुबक अपनी माँ से कहती है-

तेरी मीरा दासी भगवान की री माँ गैल गैल खन्दावै मतना।

बता मैं कुणसा अवसर चूकी मारी चोट कालजै दूखी।।[16]

जब मीरा ने राणा को 'भाई' कहा तो राणा के तन-बदन में आग लग गई। डोला उदयपुर आ पहुँचा। राणा की औरतें इंतजार कर रही थीं। वे मीरा को डोले से उतारने के लिए चलती हुई क्या कहती हैं-

दुनिया में रुक्के की बीर मीराबाई सै।

चलो लुगाइयो देखेंगी वा के-के ल्याई सै।।[17]

मीरा को डोले से उतार लिया जाता है। औरतें उसे महल में ले जाकर पीढ़े पर बैठा देती हैं तो मीरा बैठते ही अपना कीर्तन शुरू कर देती है-

आओ सखी, आओ सखी, आके सखी हे धर्ममंडली मैं।

हे सखी भजन करो, हर जी के, अलग हो ज्यांगे डर सब जी के।।[18]

मीरा को देखने आई सभी औरतें उसकी बड़ाई करती हैं और उसे समझाती हैं कि पति को परमेश्वर के समान समझना चाहिए। जब मीरा किसी भी तरह नहीं मानती है तो राणा उसे धमकाता है। उसकी जाने लेने की बात कहता है, तो मीरा निर्भय होकर कहती है-

लेज्या सिर नै काटके मेरा मरण का टाला ना सै।

भक्तां के दिल लग्या दुखावण ऊतपणे का चा सै।।

इसी नहीं तेरे धमकावण तै सहज बात डरज्यांगी।

परमेश्वर के न्या होगा जै कायदे तै गिरज्यांगी।।[19]

महाराणा ने डरा धमका कर देख लिया। अब उसको पक्की जंच गई कि मीरा ईश्वर की पक्की भक्त है। दीन-दुनिया से इसका कोई नाता नहीं और मीरा भजन कीर्तन में लीन हो गई-

आओ हे मनावैंगी बसंत सखी री ॥टेक॥

बसंत सम्बन्धी ग्रीष्म तपैंगे, फिर हम माला मेघ की जपैंगे।

शरद बलवान छुपाए ना छुपेंगे, सरद से आवेंगे हेमंत सखीरी।।

पितृ देव ऋषि ऋण तारेंगे, आओ ल्याओ, डारेंगे फूल अनंत सखी री।।

बाले बसंत को आओ हे मनावैंगे कहै लखमीचंद हरिगुण गावैंगे।

फेर मनवांछित फल पावेंगे पिछला जन्म सुभन्त सखी री।।[20]

वस्तुत: इस काव्य में मीरा की भक्ति और दृढ़ता पद-पद पर झलकती है। इस काव्य की भाषा हरियाणवी मिश्रित खड़ी बोली है। कहीं-कहीं ब्रज और उर्दू के शब्द भी समाहित हैं। सम्पूर्ण काव्य गेय है। इसे ढोलक और हारमोनियम के द्वारा आसानी से गाया जा सकता है। संगीतात्मकता इस काव्य का प्राण है। अंलकारों का यत्र-तत्र प्रयोग दिखाई पड़ता है। यह लोकनाट्य हरियाणा में बहुत लोकप्रिय है।

खुशीराम वाशिष्ठ कृत 'मीराबाई' काव्य

हरियाणा के राजकवि श्री खुशीराम वशिष्ठ का जन्म 11 सितम्बर सन् 1918 में रोहतक जिले के महम ग्राम में हुआ। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से एम.ए. (हिन्दी) एवं बी.टी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। सन् 1969 में आपको हरियाणा सरकार ने राज्य कवि मनोनीत किया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में महाविद्यालय निदेशक के पद से सेवा निवृत्त होकर आप भिवानी में रहने लगे। वाशिष्ठ जी दिवंगत हो चुके हैं। उन्होंने दर्जनों काव्य-ग्रन्थ लिखे यथा- 'प्रेमोपहार', 'आँसू फूल और अंगारे', 'बुद्ध चरित', 'मीराबाई', 'गुरु नानक', 'गुरु गोविन्द सिंह', 'रण निमंत्रण'। उक्त सभी गं्रथों में मीराबाई प्रबंध काव्य प्रमुख हैं।

इस कथा काव्य में कवि ने मीराबाई के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षणों तक की कहानी को प्रस्तुत किया है।

मीराबाई का जन्म राजा रतनसिंह राठौर के घर में होता है। रत्नसिंह के पिताश्री कृष्ण के भक्त थे। मीराबाई भी उनके प्रभाव में आकर श्रीकृष्ण की मूर्ति को गले लगाकर रखती थी। वह हमेशा श्रीकृष्ण की मूर्ति को गले लगाकर रखती थी। वह हमेशा श्रीकृष्ण के ध्यान में खोई रहती थी और सांसारिक जीवन के आडम्बरों से दूर रहती थी।[21] उनके परिजन मीरा

www.ignited.in

का विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ कर देते हैं किन्तु मीरा को ससुराल चित्तौडग़ढ़ में आकर भी संतुष्टि नहीं मिली। वह गिरधर को ही अपना पति स्वीकार करती है। कभी-कभी तो श्रीकृष्ण की मूर्ति को सामने रखकर खूब नाचती थी। वह अपने पति को, गिरधर को सौंपने के लिए कहती है। उसके पति इस वियोग को सहन नहीं कर पाते और अपने प्राण दे देते हैं। राजपरिवार के मना करने पर भी मीराबाई संतों की संगति नहीं छोड़ती। तंग आकर राणा परिवार उसे मारने के लिए हलाहल देता है। काल नाग भेजा है, किन्तु इनके ये सभी प्रयास असफल सिद्ध होते हैं। चित्तौड़ से निकाल दिये जाने पर मीरा वंृदावन चली जाती है। यहाँ उसे संत हरिदास मिलते हैं। वहाँ से मीरा द्वारिका रणछोड़ के लिए चल पड़ती है। चित्तौड़ में अकला पड़ जाता है, महामारी फैल जाती है। ऐसी अवस्था में मीरा को ढूंढने के लिए विक्रम राठौड़ निकल पड़ते हैं। जब तक वे द्वारिका पहुँचते हैं, तब तक मीरा रणछोड़ श्रीकृष्ण की मूर्ति में समाहित हो जाती है। राणा जी वहीं पर मीरा का मंदिर बनवाते हैं।

यह काव्य-रचना कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से उत्तम बन पड़ी है। इस रचना में सभी तथ्य इतिहास सम्मत हैं। इसकी भाषा सहज, सरल, खड़ी बोली है। हरियाणवी व ब्रज भाषा के शब्दों का भी सुंदर समावेश हुआ है। यह रचना अलंकार, बिम्ब, प्रतीक आदि से संवलित है।

रामभक्त लांगायन कृत 'मीरा'

रामभक्त लांगायन का जन्म 15 अगस्त, 1946 में जिला रोहतक के सुंडाना नामक ग्राम में आप। आप आई.ए.एस. हैं। सन् 006 में सेवानिवृत्त होने के बाद आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की 'रविदास पीठ' के निदेशक रहे।

मीरा एक विस्तृत निबंध है जिसमें मीरा के जीवन-वृत्त का विस्तृत वर्णन किया है। मीरा का परिचय देते हुए वे लिखते हैं- 'भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों में मीरा का विशेष स्थान है और स्त्री जाति में तो शायद उनसे बड़ा श्रीकृष्ण का कोई भक्त भी नहीं हुआ है। मीरा करताल लेकर गा-गाकर नाचती थी।... वह सत्यं शिवम् और सुदरम की साक्षात् मूर्ति थी, जिसका हृदय सदैव प्रसन्नता एवं प्रेम से भरा रहता था।'[22]

मीरा का जन्म जोधपुर के राठौर वंश में लगभग संवत् 1555 में कुडक़ी गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम रतनसिंह था। माता-पिता की इकलौती संतान होने के कारण लालन-पालन बड़े प्यार से हुआ। जब वह छोटी थी पड़ौस में एक बारात आई। मीरा ने अपनी माँ से पूछा, ''माँ, बताओ मेरा दूल्हा कौन है? माता के मुख से निकल पड़ा-गिरिधर गोपाल। मीरा उसी दिन से गिरिधर गोपाल के रंग में रंग गई। वह मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने लगी।''[23]

मीरा का विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ, लेकिन भोजराज शीघ्र ही स्वर्ग सिधार गये। पति की मृत्यु के बाद मीरा का वैराग्य पहले से भी अधिक बढ़ गया। अब उसने गुरु रैदास को अपना गुरु मानकर गिरिधर की साधना में मन लगा दिया।[24]

मीरा को मारने के लिए विष दिया गया। उसने अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए विष का प्याला ओंठों से लगा लिया और चरणामृत की तरह पी गई। विष पीकर भी मीरा को जीवित देखकर राणा विक्रमजीत का विशेष कर्मचारी आश्चर्य से आँखें फाडक़र रह गया। उसने राणा को जाकर सूचना दी कि मीरा को दिया गया विष उनकी भक्ति से चरणामृत बन गया। वह जीवित हैं। एक बार मीरा के पास पिटारी में साँप भेजा गया, लेकिन जब पिटारी खोली गई तो शालिग्राम की मूर्ति निकली।[25]

मीरा ने तुलसीदास के आग्रह से चित्तौडग़ढ़ छोड़ दिया। कुछ दिन वह मेड़ता में अपने चाचा के पास रही। इसके बाद वृंदावन पहुँची। इसके बाद वह द्वारिका चली गई, जहाँ रणछोड़ की आराधना में अपना जीवन व्यतीत करने लगी। चित्तौड़ के राणा ने मीरा को बुलाने के लिए ब्राह्मणों को मीरा को वापिस लाने हेतु भेजा। ब्राह्मणों के अनुनय-विनय के पश्चात् वह वापिस जाने के लिए तैयार हो गई। लेकिन उसने कहा कि पहले रणछोड़ के मंदिर से विदा तो ले आऊँ। मीरा रणछोड़ के मंदिर में पहुँची। उसका प्रेम सजीव हो उठा। उनके प्राण निम्न पंक्तियाँ कहते-कहते आराध्य देव में समा गए-

हरि तुम हरो जन की पीर।

द्रौपदी की लाज राखी, तुम बढ़ाओ चीर।

भक्त कारण रूप नर हरि, धर्यो आप शरीर।

हरिण्यकश्प मारि लीन्हों, धर्यो नाहिन धीर।।[26]

लांगायन जी का यह निबंध भाषा-शैली व प्रस्तुति की दृष्टि से उत्तम बन पड़ा है। भाषा सहज सरल और प्रणहमयी है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मीरा सर्वोत्कृष्ट भक्तिन थी। उनका माधुर्य भाव पद-पद पर देखा जा सकता है। वस्तुत: मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्तिन के रूप में इतिहास में सदैव

www.ignited.in

अमर रहेगी। जब तक सूरज चाँद रहेगा मीरा का नाम अमर रहेगा।

संदर्भ

1. राजदेव सिंह, संत साहित्य का पुनर्मूल्यांकन, पृ. 18
2. ब्रह्मदत्त वाग्मि, मेड़ताणी मीरा, पृ. 7
3. वही, पृ. 70
4. वही, पृ. 114
5. वही, पृ. 146
6. वही, पृ. 236
7. पूर्णचंद शर्मा, पं. लखमीचंद ग्रन्थावली, पृ. 688
8. वही, पृ. 690
9. वही, पृ. 370
10. वही, पृ. 690-91
11. वही, पृ. 693
12. वही, पृ. 693
13. वही, पृ. 697
14. वही, पृ. 698
15. वही, पृ. 704
16. वही, पृ. 707
17. वही, पृ. 709
18. वही, पृ. 711
19. वही, पृ. 717
20. वही, पृ. 718
21. महासिंह पूनिया, हरियाणा के हिंदी प्रबंध-काव्य, पृ. 40
22. रामभक्त लांगायन, विश्व की र101 महान् विभूतियाँ, पृ. 213
23. वही, पृ. 213
24. वही, पृ. 214
25. वही, पृ. 215
26. वही, पृ. 215

Corresponding Author

Pinky Devi*

Gram & Post-Deoban, District-Kaithal, Haryaya-136027